प्रेषक :- डा० अवध बिहारी लाल गुप्ता
बी-340, लोक विहार,
पीतम पुरा, दिल्ली-110034
फोन : 718-4145

दिनांक : *1997*

परम आदरणीय

जय भारत

संदर्भ :-

विषय :- "गायत्री मंत्र की वैज्ञानिक व्याख्या"-एक शोध पत्र

पुनर्व्याख्या की आवश्यकता क्यों ?

1. संस्कृत मूल पाठ के शब्दों से हिन्दी अनुवाद पूर्ण रूप से बेमेल है ।
2. वर्तमान हिन्दी अनुवाद से गायत्री मंत्र एक प्रार्थना मंत्र बन गया है । इस भावार्थ से गायत्री मंत्र की किसी प्रकार भी महत्ता सिद्ध नहीं होती तथा इसे महामंत्र अथवा वेद माता नहीं कहा जा सकता, **क्योंकि इसमें से इसकी आत्मा गायब हो गई है ।**
3. वर्तमान भावार्थ को रटने मात्र से सब कुछ प्राप्त होगा, यह अन्ध-श्रद्धा हम सैकड़ों वर्षों से पालते आये हैं, पर कब तक ?

क्या आधुनिक विज्ञान में दीक्षित नयी पीढ़ी इसे इस रूप में स्वीकार करेगी ?

यह शोध पत्र सिडनी (आस्ट्रेलिया) में लिखा गया था तथा इस शोध को वहाँ के हिन्दू समाज, प्रैस एवम् रेडियो का भरपूर सहयोग भी मिला था ।

कृपया अपने व्यस्त समय से कुछ क्षण निकाल कर इस शोधपत्र को पढ़ें और अपना समर्थन, समालोचना एवम् आशीर्वाद भेजने की कृपा करें ।

यदि आपको लगे, कि इस व्याख्या को कुछ अधिक प्रचार भारत में भी मिलना चाहिए तो मुझे इसके लिए आपका सहयोग एवम् समर्थन की अपेक्षा रहेगी ।

पुनः आदर सहित !

संलग्न :
अंग्रेजी - एक प्रति
हिन्दी - एक प्रति

भवदीय

(डा० अवध बिहारी लाल गुप्ता)

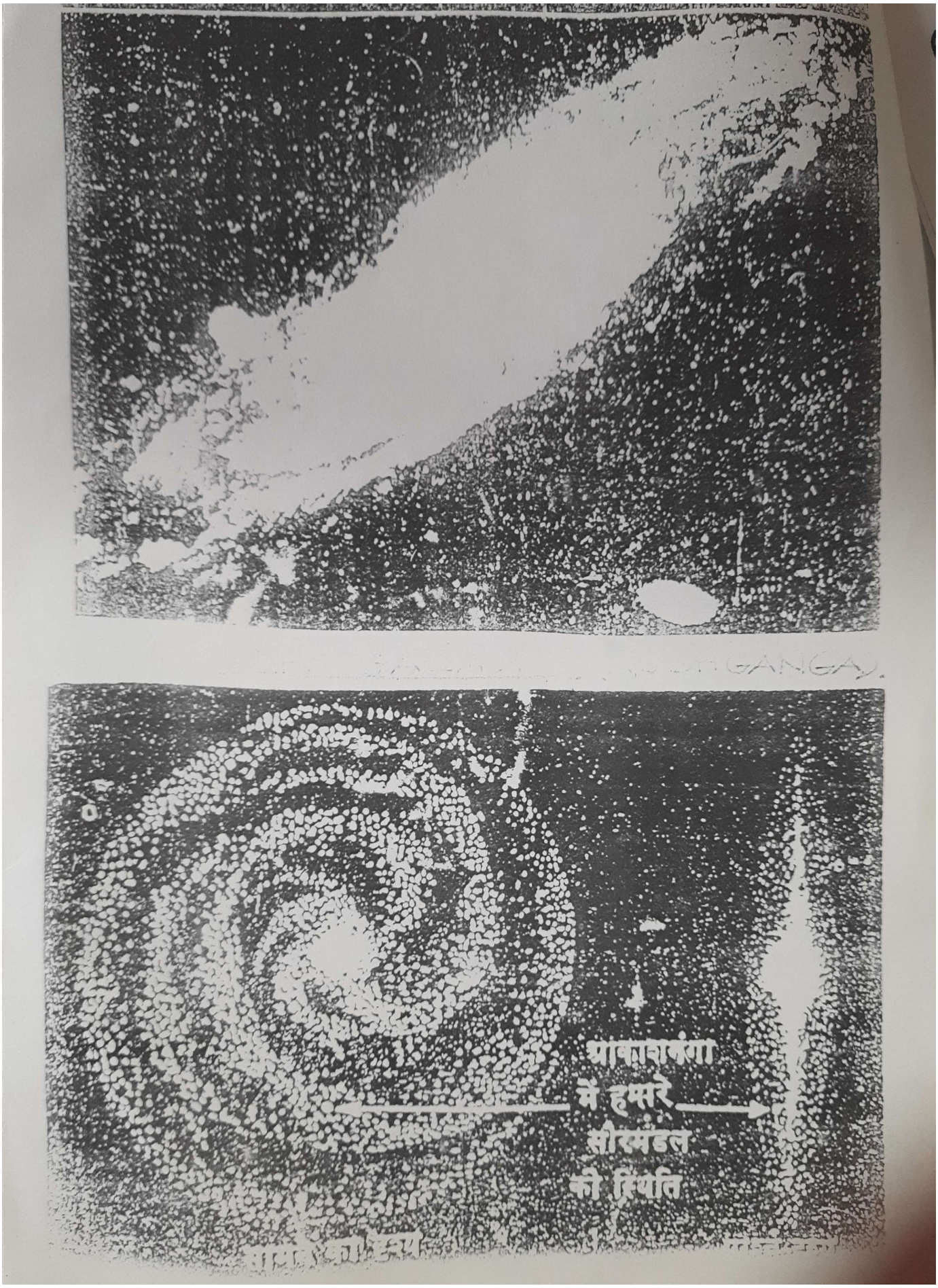
आकाशगंगा
में हमारे
सौरमंडल
की स्थिति

गायत्री मंत्र की वैज्ञानिक व्याख्या

ओऽम् भूःभुवः स्वः, तत् सवितुर्वरेण्यम्,
भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात् ।

प्रत्येक हिन्दू परिवार में गायत्री मंत्र को बड़ी श्रद्धा एवम् आदर की दृष्टि से देखा जाता है, भले ही वह परिवार वैष्णव हो, शैव हो अथवा आर्य-समाजी किसी भी सम्प्रदाय का ही क्यों न हो ।

गायत्री मंत्र को सावित्री माता एवम् वेद माता के नाम से भी जाना जाता है, तथा यह मंत्र सभी मंत्रों में श्रेष्ठ एवम् महामंत्र कहलाता है । तो आइए निम्न पंक्तियों में इस बात पर विचार करें, कि इस मंत्र में ऐसी क्या विलक्षणता है, कि इसे आदिकाल से ही इतनी उच्च प्राथमिकता दी जाती रही है ।

आज, हम लोगों के समक्ष परम्परा से इस मंत्र का जो अर्थ प्राप्त है और जो अनेक पुस्तकों में भी लगभग एक जैसा ही मिलता है, उस अर्थ को कुछ-कुछ निम्न प्रकार से कहा जा सकता है ।

हे सत्, चित् एवम् आनन्दमय ! हे सर्वज्ञ ! जिसकी सत्ता सर्वत्र है, जो सबका प्रेरक है, जो सबका प्रकाशक है, जो सर्व व्यापक है, जो दिव्य शक्तियों का महासागर है, जिसका महान् तेज सूर्यों के रूप में प्रगट है, जो अभय दाता है, सबका सर्जनहार है, जो महान् से भी महान है, उस वरण के योग्य देवता के तेज का हम ध्यान करते हैं । वह विभु (परमात्मा) हमारी बुद्धियों में विमल ब्राह्मी बल की वृद्धि करें और तन मन वचन से नित्य ही हम सभी को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते रहें ।'' आदि आदि - अस्तु वास्तव में इसे मंत्र का भावार्थ (भावपूर्ण प्रार्थना) तो कह सकते हैं, परन्तु वास्तविक अर्थ नहीं, क्योंकि इतने सारे शब्द, **जैसे अभयदाता, सर्जनहार, दिव्य शक्तियों के महासागर आदि आदि, इनमें से किसी भी शब्द का मंत्र के संस्कृत मूल पाठ में कहीं भी कोई समावेश है ही नहीं, फिर यह सब अर्थ कहाँ से, और कैसे आये ?''** ऐसी प्रार्थनाएं तो धर्म ग्रन्थों में अनेक भरी पड़ी हैं । यदि इस मंत्र में कोई विलक्षणता नहीं है तो फिर महत्ता कैसी ?

इस सम्बन्ध में थोड़ा-सा महाभारत काल से अब तक के इतिहास पर दृष्टिपात करें । मेरा कहने का यह आशय नहीं है, कि उपरोक्त अर्थ ग़लत हैं, परन्तु इतने विशेषण जोड़ देने से यह एक प्रार्थना मंत्र बन गया है, जबकि वास्तव में गायत्री मंत्र निराकार ईश्वर की उपाधि एवम् प्रतीकों के माध्यम से उपासना करने का ऋषि विश्वामित्र द्वारा खोजा गया एक श्रेष्ठ एवम् सरल उपाय था ।

भूतकाल में हिन्दू दर्शन पर अनवरत आघात

महाभारत काल से ब्रिटिश राज्य होने तक भारतीय दर्शन एवम् साहित्य को प्रभावित करने वाली अनेक बड़ी-बड़ी घटनायें हुई हैं, जैसे महाभारत में अनेक महान शूरवीरों, बुद्धिजीवियों एवम् वैज्ञानिकों का विनाश, फिर लगातार एक लम्बा अन्धकार का युग । तत्पश्चात् पश्चिम एशिया से लगातार अनेक विधर्मियों एवम् आक्रांताओं द्वारा बार-बार आक्रमण एवम् भारतीय दर्शन शास्त्रों की पांडुलिपियों की होली जलाना, अपहरण एवम् उनमें जोड़-तोड़ द्वारा उनकी सत्यता को नष्ट करना । अतः वस्तुस्थिति कुछ ऐसी बनी, कि प्राप्त वेद मंत्रों एवम् शास्त्रों की पूर्ण सत्यता (Originality) को संदेहास्पद होने से इन्कार नहीं किया जा सकता ? तो आइए अब विचार करें गायत्री मंत्र के वैज्ञानिक विश्लेषण पर । इस पर चर्चा करने से पूर्व आइए आधुनिक नभो-भौतिकी (Astrophysics) की जानकारी प्राप्त कर लें, क्योंकि इस जानकारी की पृष्ठभूमि में मंत्र का अर्थ स्वतः ही स्पष्ट हो जायेगा ।

आधुनिक नभो-भौतिकी (Astrophysics)

हमारी आकाश गंगा में **एक खरब सूर्य** हैं । कई सूर्य तो हमारे सूर्य से भी कई गुना बड़े हैं । ये सभी सूर्य अपने आप में पूर्ण ब्रह्माण्ड हैं, जिनके साथ हमारे सूर्य जैसे ही सौर परिवार हैं । हमारा सूर्य अपने परिवार के साथ आकाश गंगा के केन्द्र का एक चक्कर **22.5 करोड़ साल** में लगाता है । हमारी आकाश गंगा जैसी बहुत मोटे अनुमान से लगभग **दस अरब** आकाश गंगाएं हैं । ये सभी आकाश गंगाएं बीस हजार मील प्रति सेकंड की गति से अनन्त की ओर भागी जा रही हैं । हमारी आकाश गंगा की लम्बाई **1 लाख प्रकाश वर्ष** है । (एक प्रकाश वर्ष = 94 खरब किलोमीटर) हमारा सूर्य हमारी आकाश गंगा के केन्द्र बिन्दु से **32000 प्रकाश वर्ष** की दूरी पर है आदि आदि । प्रिय पाठको ! थोड़ा सोचें, कि एक साधारण सा छत पर लगा पंखा 900 की परिक्रमा प्रति मिनट करता है, तब कितनी ध्वनि होती है ? तो यह सहज में ही अनुमान

लगाया जा सकता है, कि इतना विशाल विश्व (Universe) जो बीस हजार मील प्रति सेकंड की गति से भागा जा रहा हो, उससे कितना भयानक शोर उत्पन्न न हो रहा होगा । यही शोर ऋषियों ने अपनी ध्यानावस्था में सुना और इसे प्रणव (प्राण = शक्ति, का वपु = शरीर) एवम् नाद ब्रह्म (बड़ा शोर, महान शोर) बतलाया परन्तु यह पॉप (कर्कश) संगीत जैसा नहीं था । इसीलिए इसका एक और नाम दिया उन्होंने, उद्गीथ = ऊपर का, अर्थात् अंतरिक्ष में होने वाला मधुर गीत ।

मंत्र निर्माण के सूत्र

संस्कृत भाषा एक अत्यन्त मधुर भाषा है और इस भाषा में मंत्रो का निर्माण कुछ विशेषता रखता है । इस भाषा के सभी वर्णमाला के अक्षरों का ध्वनि द्वारा निर्मित चित्रों का समाधि अवस्था में ही ऋषियों द्वारा अवलोकन किया गया और तब उनको लिखा गया । मंत्रों के निर्माण में संक्षिप्त, सांकेतिक एवम् सूत्रमय शैली का प्रयोग किया गया । गद्य की भाँति पूरे वाक्यों को बहुत ही कम प्रयोग में लाया गया । इस पृष्ठभूमि में आइए अब मंत्र का शब्द व शब्द अर्थ समझने का प्रयास करें ।

मंत्र का वैज्ञानिक अर्थ

(अ) नाम की खोज

ॐ भूः भुवः स्वः

1. भूः = भूमण्डल अर्थात् हमारी पृथ्वी
2. भुवः = ग्रहमण्डल = नव ग्रह
3. स्वः = अंतरिक्ष में तीव्र गति से भागती हुई सभी आकाश गंगाएं ।

यह अब एक साधारण व्यक्ति भी जानता है, कि हमारी पृथ्वी, चन्द्र एवम् सभी नव ग्रह किस प्रकार अनवरत एवम् अहर्निश सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते रहते हैं एवम् साथ ही अपनी धुरी पर भी घूमते हैं । तब तो स्पष्ट है, कि शोर तो होगा ही । साथ में अंतरिक्ष की करोड़ों करोड़ों सूर्यों के सहित सभी आकाश गंगाएं भी तीव्र गति से अनन्त की ओर भागी जा रही हैं अतएव इस शोर को समाधि अवस्था में ऋषियों ने जब सुना, तो वे एक स्वर से पुकार उठे **"युरेका-युरेका"** (मिल गया-मिल गया) अर्थात् वे खोज में निकले थे इस विशाल सृष्टि के सृजनकर्त्ता की, जो उन्हें लग रहा था, कि इस विश्व का कर्त्ता वाकई कोई महान शक्तिशाली पुरुष तो है, परन्तु है अदृश्य एवम् निराकार । ऋषि विश्वामित्र ने सभी अपने साथी ऋषियों को सुझाव दिया, कि यह जो नाद ब्रह्म ('ॐ' का महान शोर) हम सबको सुनाई दे रहा है, क्यों न इसे ही उस **सृजनकर्त्ता का नाम** मान लिया जाये ? और तब यह प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हो गया । शौनकादि अस्सी हजार खोजी विद्वानों ने भी इस पर अपनी मोहर लगा दी ।

आखिर अनादि अनन्त ईश्वर का **नाम** भी तो ऐसा ही होना चाहिए, जो अनादि एवम् अनन्त हो । यह ॐ **ध्वनि** भी अनन्त काल से हो रही है तथा अनन्त काल तक रहने वाली है । इसे प्रणव भी कहा गया, क्योंकि इस सतत् ध्वनि से जो शक्ति (प्राण) का स्पन्दन हो रहा है वह सम्पूर्ण विश्व में व्यय होने वाली शक्ति का संतुलन कर रहा है इसलिए यह सम्पूर्ण विश्व के 'प्राण' अर्थात् 'शक्ति' का वपु (शरीर) कहलाया ।

किसी भी व्यक्ति को यदि जानना हो तो कम से कम दो बातें उसके बारे में अवश्य ज्ञात होनी चाहिए । पहला **'नाम'** और दूसरा **'रूप'** । अतएव उस परमात्मा का पहला पहचान चिह्न हुआ महान शोर अर्थात् **"ॐ ध्वनि"** अर्थात् **'नाम'** । इस बात को श्री मद्भगवद्गीता में इस प्रकार कहा गया है **"ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म....."** गीता 8·13 अर्थात् **'ॐ' ब्रह्म** का एक अक्षर का **नाम** है ।

"तत्सवितुर्वरेण्यम्"

(ब) रूप की खोज

1. तत् = वह (परमात्मा)
2. सवितुः = सूर्य
3. वरेण्यम् = वन्दन करने के योग्य

अब बारी आई ईश्वर के दूसरे पहचान चिह्न की, अर्थात् "रूप" की । तो ऋषि विश्वामित्र जी मंत्र में इंगित करते हैं, कि तत् (उस परमात्मा) का अनेकानेक सूर्यों में जो प्रकाश प्रगट है, वह वन्दन करने के योग्य है । अर्थात् परमात्मा का दूसरा पहचान चिह्न सर्वसम्मति से सूर्य में प्रगट **प्रकाश** को स्वीकार कर लिया गया और इसे वरेण्य अर्थात् वन्दन करने योग्य घोषित किया गया । आखिर कोई भी व्यक्ति किसी अपने से श्रेष्ठ व्यक्ति के रूप को देखने के बाद ही तो वन्दन करता है । यह प्रकाश भी तो अनन्त काल से है एवम् अनन्त काल तक रहने वाला भी है, इसीलिए यह ईश्वर की **दूसरी उपाधि** स्वीकृत हो गयी ।

सृष्टि में सम्पूर्ण भौतिक जगत **तेज** से अर्थात् **प्रकाश** से उद्भूत होता है और अन्त में उसी प्रकाश में लय हो जाता है अर्थात् प्रकाश ही परमात्मा का सर्वप्रथम प्रगट भौतिक रूप है, नहीं तो ईश्वर है ही निराकार । उपासना हेतु कुछ न कुछ भौतिक उपादान के सहारे की परम आवश्यकता का ऋषियों ने बड़ी गम्भीरता से अनुभव किया और उसी का प्रतिफल है यह मंत्र । इस मंत्र और कठोपनिषद के मंत्र संख्या 13, अध्याय 2, चतुर्थ वल्ली (अंगुष्ठमात्रः पुरुषो ज्योतिरिवाधूमकः) के द्वारा ऐसा लगता है, कि ऋषियों ने साधकों को मार्गदर्शन दिया होगा, **कि साकार साधना के द्वारा निराकार को प्राप्त करो और लगता है तभी हुई होगी पूरे भारत में बारह ज्योतिर्लिंगों की स्थापना** । गायत्री मंत्र की खोज के उपरान्त ही साकार साधना को बल मिला, तत्पश्चात् ठोस प्रतीक (लिंग) और फिर मूर्तियों की परम्परा का चलन हुआ होगा,

क्योंकि जनसाधारण को ध्यान करने हेतु ठोस भौतिक आधार चाहिए। सगुण साकार साधना एवम् प्रतीकों के सिद्धान्त की खोज ही इस मंत्र की महानता का कारण है। इस प्रकार गायत्री मंत्र भावी उपासना पद्धतियों की खोजों की आधार-भूमि बना और इसीलिए यह मंत्र "महामंत्र" कहलाया।

(स) "भर्गो देवस्य धीमहि"

उपासना हेतु मार्गदर्शन

1. भर्गो = प्रकाश
2. देवस्य = देवता का
3. धीमहि = ध्यान करो

अब बारी है सिद्धान्त को व्यवहार रूप में लाने की। नाम-रूप की उपाधि से उस निराकार को परिभाषित करने के उपरान्त ऋषि आदेश देते हैं, कि साधको ! अब 'ॐ' नाम का जप करते हुए उस प्रकाश स्वरूप देवता का ध्यान करो।

(द) धियो यो नः प्रयोदयात्

1. धियो = बुद्धि
2. यो = जो
3. नः = हम सबकी
4. प्रचोदयात् = सन्मार्ग पर प्रेरित करें।

ध्यान करने में सबसे बड़ी बाधा होती है, कि मन चंचल होने के कारण शीघ्र ही इधर-उधर भाग जाता है और फिर ईश्वर प्राप्ति असम्भव हो जाती है। इसीलिए ऋषि ने यह अनुभव किया, कि इतना बड़ा काम अर्थात् ध्यानावस्था की प्राप्ति कर लेना कोई आसान सा काम तो है नहीं और यह कार्य ईश्वर की अनुकम्पा के बिना हो भी नहीं सकता। अतएव उपरोक्त शब्दों द्वारा परमात्मा से प्रार्थना की गई है, कि हे परमात्मन् ! आप मेरी बुद्धि को सद्मार्ग पर प्रेरित करें (चलायें), ताकि आपकी प्राप्ति हो सके। **योग, ध्यान, एवम् समाधी की खोज भारतीय ऋषियों की श्रेष्ठतम खोज है। ऐसी खोज विश्व साहित्य में आज तक नहीं हुई है।**

मंत्र का सम्पूर्ण अर्थ

हमारा पृथ्वी मण्डल, ग्रह मण्डल एवम् सभी आकाश गंगाओं की गतिशीलता से उत्पन्न महान् शोर ही ईश्वर का प्रथम पहचान चिह्न है अर्थात् "ॐ" नाम है। और वह परमात्मा जो अनेकानेक सूर्यों में प्रकाश के रूप में प्रगट है वन्दनीय है। उस देवता के प्रकाश का हम ध्यान करें। (साथ में उसके नाम का जप भी करें) और परमात्मा से यह प्रार्थना भी करें, कि वह हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर लगाऐ रखें, (ताकि सद्बुद्धि हमारे चंचल मन को नियंत्रण में रख सके और साधक को ब्रह्मानन्द, अर्थात् अखण्ड आनन्द की अनुभूति करा दे।)

सारांश

इस मंत्र की खोज उस संक्रमण काल में हुई जब सभी विद्वान ईश्वर को निर्गुण निराकार ही मानते थे।

संक्षेप में यह है, कि गायत्री मंत्र एक खोजी (Research) मंत्र है। इस मंत्र द्वारा ऋषि विश्वामित्र ने सर्वप्रथम ईश्वर उपासना को निर्गुण निराकार से बाहर लाकर सगुण साकार पद्धति सुझायी थी। किसी भी नए विचार को अपने समय में प्रतिरोध का सामना तो करना ही पड़ता है और ऐसा लगता है कि जब यह विचार सर्वप्रथम प्रस्तुत किया गया होगा, तो ऋषि वशिष्ठ जैसे विचार वाले निर्गुण निराकार उपासकों द्वारा इसका तीव्र विरोध हुआ होगा, जैसा कि आज भी कई सम्प्रदाय सगुण साकार का जी भर कर विरोध करते हैं। वे यह सोच ही नहीं पाते हैं, कि यह शुद्ध गणित का समीकरण है ($क^2 + ख^2 = 4$; और यदि क = 2, तो ख = 0) **अर्थात् यह ज्ञात के द्वारा अज्ञात को खोजने का एक वैज्ञानिक मार्ग है।** ऋषि विश्वामित्र को विजय, लम्बे संघर्ष एवम् खण्डन मण्डन के उपरान्त मिली, अर्थात् इस बीच कटुता भी काफी हुई और ऋषि वशिष्ठ के सौ पुत्र (सैकड़ों विचारों का खण्डन हुआ) और अन्ततः ऋषि वशिष्ठ द्वारा **ऋषि विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि की उपाधि से विभूषित कर ही दिया गया** अर्थात् उनके इस सिद्धान्त (Thesis) को सार्वजनिक एवम् सर्वोच्च सम्मान मिल ही गया। गायत्री मंत्र की महत्ता को श्रीमद्भगवत् गीता में भगवान श्री कृष्ण ने इस प्रकार बतलाया है **"गायत्री छन्दसामहम्"** अर्थात् छन्दों में "मैं गायत्री छन्द हूँ"।

लगता है, कि प्रतीकों के इस महान सिद्धान्त की स्वीकृति के पश्चात् ही सम्पूर्ण दर्शन शास्त्र की शिक्षाओं को सरस तथा जनसाधारण के लिए सरल एवम् ग्राह्य बनाने हेतु तमाम कथाओं तथा पुराणों की रचना की गई।

पारम्परिक अर्थ की विवेचना

समाज में दो प्रकार के विद्यार्थी होते हैं - प्रथम साहित्य एवम् कला के विद्यार्थी तथा दूसरे विज्ञान के विद्यार्थी। पारम्परिक अर्थ साहित्य के विद्यार्थियों के लिए ठीक है, क्योंकि हर युग में हर गुरु वही शिक्षा देता है, जो देश-काल परिस्थितियों के अनुकूल हो। साहित्य एवम् कला के विद्यार्थियों की संख्या सदैव से अधिक रही है और विज्ञान की समझ सभी के लिए सरल भी नहीं है, अतएव मनोविज्ञान के इस सिद्धान्त को ध्यान में रखकर कि मनुष्य "जिन-जिन विचारों का निरन्तर चिन्तन एवम् मनन करता है, वह उसे अवश्य प्राप्त हो जाता है", इस पारम्परिक भावार्थ का सृजन परावर्ती काल के पण्डितों ने किया होगा। आखिर उद्देश्य तो ईश्वर प्राप्ति ही है न ? चाहे ईश्वर के गुणों - **जैसे शक्ति स्वरूप, ज्ञान स्वरूप, प्रकाश स्वरूप आदि पर चिन्तन किया जाए अथवा शुद्ध प्रकाश पर, फल प्राप्ति तो ईश्वर ही है,** अतएव यह सोचकर पारम्परिक अर्थ को सही माने जाने में कोई हर्ज नहीं है।

वास्तव में, ऋषि विश्वामित्र ने तो सगुण पहचान चिह्नों की सहायता से उपासना करके जनसाधारण को ईश्वरानुभूति तक ले जाने हेतु गायत्री मंत्र में सरल पद्धति सुझाई थी, परन्तु बहुत लोग न तो गुणों पर चिन्तन करने के विचार को समझ पा रहे हैं और न ही प्रकाश पर ध्यान एकाग्र करने के वैज्ञानिक पहलू को समझते हैं, बल्कि उनका कुछ ऐसा मानना है, कि इस मंत्र को बार-बार सस्वर रटने मात्र से आत्म शुद्धि एवम् भगवत् प्राप्ति आदि सभी कुछ सम्भव है। यह बात विचारणीय है, कि आज के विज्ञान के युग में राकेट और रोबोट द्वारा खोज कर रही युवा पीढ़ी को ऐसा अन्धविश्वास पूर्ण विचार परोसना निवर्तमान पीढ़ी के लिए हास्यास्पद ही नहीं, बल्कि अनुचित भी है। आशा है, कि प्रबुद्ध पाठक इस भूल पर गम्भीरता से विचार करेंगे और समाज में फैले इस भ्रम को दूर करने की चेष्टा करेंगे।

मंत्र के पारम्परिक अर्थ पर पुनर्विचार के कारण

कुछ समय पूर्व की बात है, कि लेखक की एक विज्ञान के स्नातक नवयुवक से भेट हो गयी। वह संस्कृत भी जानता था एवम् बचपन से ही गायत्री मंत्र का जप करता रहा था। उसने मुझसे गायत्री मंत्र का अर्थ पूछा। मैंने सरल स्वभाव से रटा रटाया पारम्परिक अर्थ बतला दिया। वह नवयुवक इतना हँसा - इतना हँसा, कि मैं हक्का बक्का रह गया। जब उसने यह बतलाया, कि जो विशेषण हिन्दी अर्थ में बतलाये गये हैं, *वे मंत्र के संस्कृत मूल पाठ में एक भी नहीं हैं और न ही इस अर्थ से गायत्री मंत्र को वेदमाता होने का औचित्य ही सिद्ध होता है,* तब मुझे एक झटका लगा और तभी से मैं इस मंत्र की गहराई में जाकर इसकी खोज में लग गया। उपर्युक्त विश्लेषण उसी खोज का परिणाम है।

व्याख्या का उद्देश्य

यदि वेद के तमाम मंत्रों एवम् मूल सिद्धान्तों की व्याख्या वैज्ञानिक पण्डितों द्वारा करायी जाये, तो वैदिक धर्म को बहुत सरलता से संयुक्त राष्ट्र की मान्यता मिल सकती है और तब यह धर्म एक बार पुनः पूरे विश्व का धर्म बन सकता है। वेद के निम्न मूल सिद्धान्त हैं, जिनको कि वैज्ञानिक रूप से सिद्ध करना परम आवश्यक है।

1. कर्म का सिद्धान्त (Law of Karma)
2. पुनर्जन्म का सिद्धान्त (Law of Re-incarnation)
3. लोक-परलोक का सिद्धान्त
4. परिवर्तनशीलता का सिद्धान्त (Law of Constant Change)
5. समग्रता का सिद्धान्त (Law of Totality)
6. सूक्ष्मता का सिद्धान्त (Law of Microfication)
7. चक्र का सिद्धान्त (Law of Cycle)
8. यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे (As the Microcosm, so the Macrocosm)
9. यथा दृष्टि तथा सृष्टि (What you think, so you become)
10. अन्तःकरण (मन + बुद्धि + चित्त + अहंकार) की रचना
11. प्राण (ओज + तेज) योग साधना का आधार
12. योग, ध्यान एवम् समाधी द्वारा मोक्ष प्राप्ति

यह सत्य है, कि हिन्दू धर्म का प्रचार अब तक अनेक संत एवम् महापुरुष विदेशों में जा-जा कर करते रहे हैं, परन्तु उपरोक्त सुझाव के कार्यान्वित हो जाने पर मुझे विश्वास है, कि हिन्दू धर्म की ध्वजा विश्व में सरलता से फहरायी जा सकती है, क्योंकि आज विज्ञान के आगे सभी नत-मस्तक हैं।

आशा है, कि विद्वान पाठकगण उपरोक्त विश्लेषण एवम् प्रस्ताव से सहमत होंगे। इस विश्लेषण से यदि किसी व्यक्ति विशेष अथवा संस्था के विचार को चोट पहुँचती हो, तो लेखक हृदय से क्षमाप्रार्थी है। सभी पाठकों से अनुरोध है, कि वे कृपा करके अपनी प्रतिक्रिया अवश्य लिख भेजें, जिसके लिए लेखक उन सभी का अग्रिम धन्यवाद करता है। अनेकों धन्यवाद के साथ।

शुभम् भूयात्।

भवदीय

डा० अवधविहारी लाल गुप्ता
धर्म प्रचार मंत्री (श्री सनातन धर्म सभा)
बी-340, लोक विहार, पीतम पुरा,
दिल्ली-34 दूरभाष : 718-4145

Pl see P- 2

[+] प्रणव को अनाहद नाद भी कहा गया है। अर्थात् ऐसा नाद (ध्वनि) जो बिना चोट के उत्पन्न हो रहा है। यह एक चमत्कार ही है, कि आकाश (Space) में हवा भी नहीं है, फिर चोट अथवा घर्षण कैसा ? फिर भी ऋषियों ने समाधी अवस्था में यह नाद सुना है, अतएव इसे अनाहद नाद कहा है। वास्तव में विज्ञान भी मानता है, कि अपरिमित (Absolute) परिस्थितियों में ऐसे चमत्कार होते हैं, जैसे कि एलाक्ट्रॉन्स (Electrons) के मामले में होता देखा जाता है। इसे यों भी समझें कि गति एवम् मात्रा (Mass) इतनी अपरिमित है कि कुछ भी चमत्कार सम्भव है।